

Shri Ganesha Puja

Date : 5th December 1993
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 07
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	08 - 10

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

इस यात्रा की शुरुआत हो रही है और इस मौके पर जरूरी है कि हम गणेश पूजा करें खासकर दिल्ली में गणेश पूजा की बहुत ज्यादा जरूरत है। हालांकि सभी लोग गणेश के बारे में बहुत कम जानते हैं। और क्योंकि महाराष्ट्र में अष्ट विनायक हैं और महा गणपति देव तो गणपति पूजे में हैं। इसलिए लोग गणेश जी को बहुत ज्यादा मानते हैं। लेकिन उनकी वास्तविकता क्या है? गणेश जी हैं क्या? इस बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। अब जो भी बात हम आपको बता रहे हैं यह सहजयोगी होने के नाते आप लोग समझ सकते हैं। आम दुनिया इसे नहीं समझ सकती। एक हद तक आम दुनिया, विशेषकर बुद्धि परस्त लोग सहजयोग को देख सकते हैं। किन्तु इस योग को घटित होने में जो देवी देवता मदद करते हैं वो इसे नहीं मानते। और परमचैतन्य को भी अनेक तरह के नाम दे कर के वो समझाते हैं। कि ये अंतरिक्षीय (Cosmic) है पता नहीं वो भी समझते हैं कि नहीं। तो सबसे पहले इस पृथ्वी की रचना होने से पहले परमात्मा ने ही सोचा आदिशक्ति ने यही सोचा कि इस पृथ्वी पर सबसे पहले पवित्र्य आना चाहिए, पवित्रता आनी चाहिए। और पवित्रता जब वहां लाई जाएगी उसके बाद सृष्टि में चैतन्य चारों ओर कार्यान्वित होगा। लेकिन ये समझ लीजिए कि परम-चैतन्य चारों ओर फैला हुआ है। लेकिन उसका असर अभी आता है जब आपके अन्दर पवित्रता होगी। अगर आप पवित्र नहीं है, आपके विचार शुद्ध नहीं हैं या आप किसी और ही सतह पर रह रहे हैं, तो आप सहज कि गहराई में नहीं उतर सकते। ये सूक्ष्मता जो आपने सहज में प्राप्त की है। इसमें सबसे बड़ा काम श्रीगणेश ने किया है। तो श्री गणेश परम चैतन्य के चेतक है। यों कहना चाहिए कि श्री गणेश से ही ये परमचैतन्य आलोकित हुआ है। और हर एक चक्र पर ये कार्य करते हैं। हर चक्र में जब तक निर्मलता, पवित्रता न आ जाए तब तक कुण्डलिनी का चढ़ना असम्भव है। और चढ़ती भी है तो वो बार-बार गिर जाती है। कुण्डलिनी और गणेश जी का सम्बन्ध माँ और बेटा का है। इसकी बात को हम जानते हैं कि जब पार्वती जी नहा रही थी — तब उन्होंने

अपना मल निकाल कर, उनके मल में तो चैतन्य भरी हुई है, उससे श्री गणेश बनाए और उनको बाहर बिठा दिया। उस वक्त एक बात समझनी चाहिए कि गणेश जो बनाया वो सिर्फ आदिशक्ति ने बनाया। उसमें सदाशिव का बड़ा भारी हाथ नहीं था। परमात्मा का इसमें हाथ नहीं था। सिर्फ आदिशक्ति ने श्री गणेश को बनाया। इसी तरह से आप समझ सकते हैं ईसा मसीह को ये जो कहते हैं कि गैबरील ने आकर जब मेरी को बताया कि तुम्हारे पेट से जग का उद्धारक पैदा होने वाला है तो वो कुंवारी थी। तो कुंवारेपन में किसी के यहां बच्चा हो तो अपने यहां उसे बड़ी शुभ बात नहीं समझते। पर अति शुभ कैसे श्री गणेश हैं? उनको पार्वती जी ने सदाशिव की गैरहाजिरी में बनाया। ये हिन्दुस्तानी बहुत आसानी से समझ सकते हैं। पर विदेशी लोग इसको नहीं समझ सकते क्योंकि वो ईसामसीह को मनुष्य ही समझते हैं, इससे ऊंचा नहीं उठ सकते। इसलिए उनको जो बौद्धिक परत है वो इतनी आमादा हैं कि किसी भी तरह से नहीं मान सकता कि कौमार्य अवस्था में इस तरह ईसा मसीह का जन्म हो सकता है। अब इसी बात की ओर गौर करें। अब आप लोग सहजयोगी हैं और आप लोगों ने चमत्कार देखे हैं। चैतन्य ने अनेक चमत्कार किए हैं। जिसका असर आप पर भी आ गया है और दुनिया कि तरफ आपकी नजर बदल गयी। ये जिन्होंने पाया है वो सोचने लगे हैं कि जो दुनिया में हम लोग देखते हैं वो माया उससे परे एक और दुनिया है ये सत्य है। ये सहजयोगी देखते हैं वो अपनी उंगलियों पर जान सकते हैं कि श्री गणेश की अभिव्यक्ति जो हुई वह सत्य है। जहां तक कि मैंने ग्रीस में देखा कि ग्रीस में अथेना (आदिशक्ति) का अवतरण हुआ।

और जब वहां गयी और उनको देखने गयी और पड़ोस में जो उनका मन्दिर बना हुआ है तो बाहर उन्होंने बताया कि यहां एक शिशु देव हैं। आश्चर्य की बात है। उनको मालूम नहीं है कि यह कौन शिशु देव हैं क्योंकि दूसरे लोगों ने आकर उनकी सारी परम्पराएं नष्ट कर दी हैं। हालांकि हिन्दुस्तान में अभी भी हमारी परम्पराएं जारी हैं। इसलिए उनको अविश्वास है। जब बातें मानते ही नहीं हैं। उसी

प्रकार अन्य एक जगह है, जहां हम गये थे, वहां पर उन्होंने कहा कि ये नाभि है और एक ऐसा गोल सा चट्टान जैसा पत्थर का टीला था। बहुत चैतन्य उसमें बह रहा था। पीछे से ऐसी लहरियां आने लग गईं मैंने मुड़कर देखा तो वहां साक्षात् गणेश खड़े हैं। उनको क्या मालूम कि गणेश क्या होते हैं? मैं देख कर हैरान हो गयी। स्वयम्भू और इतने चैतन्यपूर्ण। लेकिन बिना सहजयोग के गणेश के पास जाना बहुत मुश्किल है और उसके बाद भी जो धर्म के लोग आए, जिन्होंने वाकई धर्म जाना उनका चित्त धर्म पर था कि लोग स्वच्छ हो जाए, पवित्र हो जाए और लोग ऐसी दशा में चले जाएं कि सब उनका उद्धार होने का समय आएगा उस वक्त वो साफ हों इसलिए उन्होंने धर्म की ओर ज्यादा ध्यान दिया कि लोगों का धर्म कैसे ठीक किया जाए। जिससे कि लोगों में वो स्थिति आ जाए कि वो अपना आत्म साक्षात्कार आसानी से प्राप्त करें। हमारे यहां भी नानक आदि बड़े बड़े गुरु हो गए हैं उन्होंने यह मेहनत की कि मनुष्य कम से कम धर्म पर चलना सीखे। यानि कि वो सन्तुलित रहे माने उसके अन्दर के जो विचार हैं और वो पाप पुण्य में पुण्य ही देखता रहे।

श्री गणेश का कार्य और तरह का है। श्री गणेश अपनी शक्ति से ही दक्ष बन गए। उनकी शक्ति सबसे बड़ी है अबोधिता। उनके सिर पर हाथी का जो सिर है उसका मतलब यह है कि उनमें मनुष्य जैसे अहं और प्रति अहं नहीं है। और वो बच्चे हैं तो कहना चाहिये शाश्वत शिशु हैं। और उनका अवतरण इस संसार में ईसा मसीह के नाम पर हुआ। अब उसका हम लोग विज्ञान से हर प्रकार का अनुमान लगा लेते हैं। तो ऐसे कि मैंने कहा था कि श्री गणेश एक शक्ति है निराकार में और साकार में श्री गणेश जैसे हैं। इसका मतलब ये कि हमारे यहां अगर भोलापन, सादगी, सरलता, विश्वास हो, ऐसे निर्मल अन्तःकरण से श्री गणेश कि जागृति हो सकती है। श्री गणेश के बगैर तो कुण्डलिनी चढ़ नहीं सकती क्योंकि कुण्डलिनी गौरी है और उस गौरी को उत्थान करने में श्री गणेश उसके साथ हर समय उसे संरक्षित करते हैं। इतना ही नहीं हर चक्र पर जब कुण्डलिनी चढ़ जाती है तो उसके मुंह को बंद करके कुण्डलिनी को गिरने से रोकते हैं।

अब ये श्री गणेश हमारे अन्दर मूलाधार पर बैठे हैं। इसी में बहुत लोगों ने गलती कर दी मूलाधार चक्र जो है वो त्रिकोणाकार अस्थि में है। यह बहुत बड़ी गलती है। मूलाधार में सिर्फ कुण्डलिनी है और मूलाधार से नीचे

मूलाधार चक्र में, मूलाधार में श्री गणेश विराजे हैं। और उसके कार्य क्या हैं, ये तो आप लोग सब जानते हैं। आपने हमारे फोटो देखे हैं कि हमारे पीछे श्री गणेश खड़े हैं हमारे ऊपर भी श्री गणेश हैं। इसी प्रकार आपके साथ भी होता है कि नहीं होता। लेकिन श्रीगणेश की शक्ति जो पवित्रता की है मैं जरूर कहूंगी कि हिन्दुस्तान में इसके मामले में सब लोग जानते हैं कि हमको पवित्र रहना है। परदेस में नहीं। परदेसियों को तो पहले से मलेच्छ कहते हैं माने इनको मल की ही इच्छा है और श्री गणेश निर्मल हैं। हिन्दुस्तानियों में निर्मलता की इच्छा है, बहुत है और अगर नहीं भी है तो कम से कम इसका ढोंग तो करते ही हैं। इसी ढोंगीपन से कम से कम ये फायदा है कि एक मनुष्य में जो भी खराबियों हैं। वो समाज में नहीं फैलती। लेकिन विदेशों में तो वो सोचते हैं कि ये जो खराबियां हैं इनको कोई बड़ा भारी हम आह्वान दिए हुए हैं, बड़ा भारी कोई कार्य कर रहे हैं। तो खराबियों को अच्छा मान लेना क्या उसमें कोई हम बड़ा भारी साहसकर है ऐसे समझ करके। उसमें रत रहना हम लोगों के हिसाब से तो बेवकूफी है। लेकिन अगर आप अमेरिका जाए तो आपको पता हो जाएगा कि वहां गणेश जी हैं ही नहीं। माने ये कि वो विचार ही नहीं रहे हैं। अब जब उसके कुछ परिणाम दिखाने लग गए जब नुकसान दिखाने लग गए तब वो सोचते हैं कि हमें तो विश्वास होना चाहिए और हमें सफाई रखनी चाहिए। आधी बातें कट गई और उसका असर अब हमारे यहां है। सहजयोग के सिवा वो लोग नहीं बच सकते। लेकिन आप लोगों के पास तो ये सम्पत्ति है। अगर वहां के लोगों को देखा जाए तो उनके मुकाबले में यहां भी बहुत से लोग हैं गंदे रास्ते पर चलते हैं, गंदे काम करते हैं, पर छुपा कर करते हैं। खुले आम नहीं। मतलब वो जानते हैं कि इस चीज से समाज में प्रशंसा नहीं होगी। विशेषकर जो लोग बाहर हो कर आए हैं उनमें ये दोष पाया जाता है। बड़े चरित्रहीन होते हैं और चरित्रहीनता को वो बड़ा भारी कमाल समझते हैं और सोचते हैं इसमें तो खास बात है। हम कोई विशेष सुन्दर हैं, हमारे अन्दर यह विशेषता है। इस प्रकार का आरोप करते हुए अपने पर बहुत गर्व करने लग जाते हैं। अबोधिता की जो शक्ति है वो ये कि ये अबोध हैं। माने ये कि उसके अन्दर किसी तरह की खराबी नहीं है। कोई खराबी दिमाग के अन्दर नहीं है। वो बिल्कुल साफ सुथरा इन्सान है। ईसा मसीह ने कहा था कि जब तुम्हारे उत्थान का समय आए तब तुम बच्चों जैसे हो

जाओगे। उस वक्त और भी शक्तियां जो गणेश जी की हैं। वो छोड़ के वो आपमें सिर्फ अबोधता भर देते हैं। जिसके सहारे आप अपना आत्म साक्षात्कार प्राप्त करते हैं। अब किसी बुद्धिमान से बात करें जो बुद्धि पुरस्तर है, वो यह नहीं समझ पाता कि गणेश जी ही कैसे हमारे देवता हैं? वो समझाने कि बात ऐसी है कि जब तक आप सूक्ष्म नहीं होते हैं आप समझ नहीं पाएंगे कि आपके अन्दर ये सब देवता हैं। श्री गणेश के चार हाथ हैं। मैंने बताया था कि कार्बन कण की चार संयोजकताएं (वैलेन्सीज) होती हैं। निराकार में सब आप उनको बाईं ओर से देखते हैं तो वो स्वास्तिक रूप में दिखाई देते हैं। फिर आप दाईं ओर से उनको देखते हैं तो वो ओंकार दिखाई देते हैं बहुत से ओंकार। जितने कार्बन एटम हैं वो ओंकार से दिखाई देते हैं। और नीचे से ऊपर को अगर आप देखें तो बीच में अल्फा और ओमेगा दिखाई देते हैं। ईसा मसीह ने कहा था मैं अल्फा और ओमेगा हूँ। अल्फा माने शुरुआत और ओमेगा माने अन्त। और उसके जो प्रतीक बने हुए हैं वही प्रतीक बिल्कुल आपको दिखाई देंगे। इन्होंने उन पर काम किया। मैं जो भी कहती हूँ ये विदेशी लोग एकदम से बड़े जोर से उसका पता लगाते हैं। तो उन्होंने देखा कि जब इन्होंने कार्बन एटम का फोटो लिया तीन दिशाओं से तो बराबर तीनों प्रतीक नजर आए। सिद्ध हो गया कि ईसा मसीह जो थे अल्फा और ओमेगा बन गए वहीं उसकी जड़ें थी। वही ओंकार थे और वही स्वास्तिक। स्वास्तिक अगर ठीक से बनाया हो, उसकी गति दायाँ ओर को होती है वो स्वास्तिक प्रगतिशील होता है। और उसकी गति यदि बायीं ओर हो गयी, चक्र उल्टे हो गए तो मनुष्य का सर्वनाश हो जाता है। उसे हर तरह कि बिमारियां हो जाती हैं। और फिर ऐसी बिमारियां हो सकती हैं जो आप बिल्कुल भी किसी भी तरह से ठीक नहीं कर सकते। जैसे कि आप जानते हैं कि हमारे जो स्नायु हैं वो एक बार शिथिल होने लग जाते हैं। उसे आर्थराइटिस की बीमारी हो जाती है। उसमें आदमी हिलने लग जाता है और उसकी बिमारी ठीक नहीं होती। धीरे-धीरे उसके स्नायु जो हैं कमजोर होने लग जाते हैं। ये श्री गणेश की उल्टी दशा में घूमने की वजह से होता है। वही हाल हिटलर का हुआ था। हिटलर ने श्री गणेश की शक्ति इस्तेमाल करने के लिए स्वास्तिक बनाया। जब तक वह सीधी तरह से बना था। तब तक वो काफी बचे रहे। फिर ये स्टेसिल उन्होंने दूसरी तरफ से इस्तेमाल करना शुरू किया तो उल्ट गया। उसके उल्टे हो जाने से ही हिटलर हारा। स्वास्तिक का इलम बहुत से लोग समझते नहीं कि

स्वास्तिक को इस्तेमाल कैसे किया जाय। कोई भी इस्तेमाल कर सकता है। वो तो अबोध हैं न। लेकिन वो अपना असर दिखाते हैं। जैसे हमने कहा था कि श्री गणेश को किसी तरह की अभद्रता पसंद नहीं है, गलत काम उन्हें पसंद नहीं है। और महाराष्ट्र में श्री गणेश के उत्सव होते हैं। पूना में मुझे देखते-देखते इतनी हैरानी हुई कि वहाँ के लोग गणेश के सामने जो अराधना करते हैं बाद में और पहले बहुत गंदे गीत गाते हैं। डिस्को डांस करते हैं और इतने गंदे कपड़े पहनते हैं। औरतें भी कम नहीं। तो मैंने उनको बताया था कि श्री गणेश से डरना चाहिए और अपने भाषण में मैंने कहा था कि ये भूः तत्व के बने हैं। और ज्यादा हुआ तो भूकंप आ जाएगा और वही बात हुई। जिस दिन गणेश जी का विसर्जन हुआ उसके बाद घर पर आकर सब लोग शराब पीकर नाच रहे थे। तभी भूकंप ने सब नाश कर दिया। हम लोग सोचते हैं, ऐसा परदेश में ये सब हो रहा है। तो यहाँ पर भी क्यों न हो? अब वहाँ पर बीमारियां आ गयी। एड्स आ गए और दुनिया भर की गंदगी आ गयी। हजारों लोग इनसे खत्म हुए चले जा रहे हैं। वहाँ कि जो नाश शक्ति है, विनाश शक्ति है वो अन्दर से चालित है। हम लोग यहाँ बैठे-बैठे समझ ही नहीं पा रहे हैं। 65% लोग अमेरिका में एकदम जर्जर हो जाएंगे। अनेक तरह की बीमारियां है जो हम लोग यहाँ सुनते भी नहीं है वहाँ हो रही हैं। यहाँ कीड़े-मकोड़े, मच्छर आदि इतने हैं, सब तरह की गरीबी है पर मनुष्य साफ हैं। अब ये कह नहीं सकती कि आगे मनुष्य की क्या स्थिति होने वाली है। पावित्र्य के विरोध जाना माँ के खिलाफ अपराध करना है। एक पुण्य शक्ति के खिलाफ जाना है। फ्रायड जैसे कुछ गंदे लोग आए और उन्होंने ये सब कहा कि यह सब गलत है इससे कोई फायदा नहीं होगा और माँ के साथ यह पवित्रता बनाई ही नहीं जा सकती। वो मरे हैं कैंसर की बीमारी से, बहुत परेशानी भुगत कर।

श्री गणेश जी को ठीक करने से मनोदैहिक बीमारियां जो हैं जिन का इलाज डाक्टर लोग नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वो डाक्टर सिर्फ दैहिक रोगों को ठीक करते हैं, श्री गणेश उन को भी ठीक करते हैं। अब ये बात जो सहजयोगी नहीं हैं उसको बताने कि नहीं है। वो कहेंगे कि ये क्या है कि हाथी को पूज रहे हैं। और ये गलत काम कर रहे हैं। पर वो एक प्रतीक है। और ये जो प्रतीक होते हैं ये सब बनाए जाते हैं जब शब्दों में बताया नहीं जा सकता न समझाया जा सकता है। इसलिए प्रतीक बनाए जाते हैं। और ये प्रतीक हम लोग जानते थे। आज लोग कहते हैं कि ये कल्पनाएँ हैं और इस

तरह से आप कल्पना में गहरे उतर गए। लेकिन सहजयोग में आज यही प्रतीक सिद्ध हो गए हैं। ये वास्तविक है ये प्रतीक रूप से जो आपके सामने सत्य में आ गया कि ये सच्चाई है। लेकिन मनुष्य कि बुद्धि कहां तक जा सकती है? उसके सिवाए वो ऐसी चीजों को मान ही नहीं सकता जो दिखती नहीं है उसके लिए आँखें मूंद कर वो कभी सोचे कि ये जो प्रान्त है, क्षेत्र है जिसे मैंने जाना नहीं है, इसको अगर जानना है तो मेरी अन्दरूनी दशा समझनी होगी। क्योंकि मानव स्थिति में मैं इसे नहीं जान सकता।

मैं दिल्ली के लिए इसलिए कह रही थी कि श्री गणेश कि पूजा आवश्यक है क्योंकि श्री गणेश और गौरी का सम्बन्ध है नितान्त है, शाश्वत और जब तक यहां श्री गणेश की स्थापना नहीं होगी, तब तक यहां जो समस्याएं हैं, खासकर राजनैतिक समस्याएं वो ठीक नहीं होंगी। उसके लिए ऐसे लोग चाहिए जो पवित्र हैं और जो बच्चों जैसे भोले हैं। तो लोग कहेंगे कि बच्चे जैसे लोग शासन नहीं कर सकते लेकिन ऐसे लोग हैं कहां ऐसे लोग जब प्रशासन में आएंगे तो आपको पता होगा। श्री गणेश जो हैं वो बुद्धिमान हैं ही लेकिन बुद्धि में जो विवेक है, सत्य, असत्य क्या है, ये उनको पता है और उसके कारण मनुष्य जो सत्य है उसी को प्राप्त करता है। और पूरी उसमें अपनी जान लगा देता है। ये जो पाप कर्म हैं इसी के लिए तो लोग पैसा इकट्ठा करते हैं। जैसे आप लोग किसी को पैसा दे दीजिए तो फौरन वो किसी गलत चीज के पीछे दौड़ेगा या शराब पीना शुरू कर देगा। लेकिन अगर आप गणेश के पुजारी हैं तो आप ये सब कभी नहीं करेंगे। क्योंकि ईसा मसीह ने जब उनका अवतरण लिया तो हमारे सर में, आप जानते हैं, कि आज्ञा चक्र की दो खिड़कियां हैं, एक आगे एक पीछे। आगे वाली जो है उससे हम देखते हैं, उससे आँखों की चालना होती है। इसलिए जिस आदमी के गणेश गड़बड़ हो जाते हैं उनकी आँख स्थिर नहीं हो सकती, घूमती रहती है। और ईसा मसीह ने तो एक कहीं अधिक सूक्ष्म बात कही। Though shall not have adultrous eyes, 'आपकी दृष्टि अपवित्र नहीं होनी चाहिए' माने आँख में किसी भी तरह का लोभ या मोह या अपवित्रता नहीं होना चाहिए। ऐसी शुद्ध आँखें होनी चाहिए बताईये कि ईसाई लोगों में, अगर आप लोग परदेस में जाएं, तो आपको बहुत कम लोग मिलेंगे, जो आँखें नहीं घूमाएंगे। नहीं तो सारे आँखे घूमाते हैं। उसका असर चित्त पर आता है।

इस तरह से अपना चित्त जो गणेश की तरह बड़ा सुन्दर है वो श्री गणेश की ही शक्ति है क्योंकि वो सत्य असत्य विवेक बुद्धि हैं। नीर क्षीर विवेक बुद्धि। संस्कृत में एक श्लोक है कि हँस भी सफेद है और बगुला भी। तो दोनों में क्या अन्तर है? अन्तर ये है कि हँस दूध में से पानी अलग कर देता है पर बगुला ऐसा नहीं कर सकता। इस प्रकार ये जो देवी विवेक बुद्धि जो है, देखा जाए तो श्री गणेश की शक्ति है। सहज योग में आपको इतनी शक्ति आ जाती है, क्योंकि आत्मा स्वरूप श्री गणेश का प्रकाश जब हमारे अन्दर आ जाता है और फिर हम इस प्रकार से सोचते हैं कि अरे ये तो बेकार है। अब श्री गणेश की पूजा हो रही है, ये हैं तो हैं, घंटे बज रहे हैं। पर उनसे कुछ फायदा नहीं है। उसका कारण ये है कि अपने अन्दर वैसे श्री गणेश की पूजा करनी चाहिए, मतलब कि अपने अन्दर वो पवित्रता जो श्री गणेश का आशीर्वाद है वो आना चाहिए अब लोग कहेंगे कि मां वो कैसे आएगा। आपको सिर्फ इस पर ध्यान करना है। ध्यान धारणा से अन्दर से सारी सफाई हो जाएगी। बाई ओर की सफाई श्री गणेश को पाने से होती है। आपको चाहिए कि एक बार आप माँ की ओर नज़र करें और एक बार पिता की ओर नज़र करें। इसमें हिन्दुस्तानी बहुत मार खा रहे हैं। वो हर समय ये सोचते हैं कि पैसा बहुत बड़ी चीज है। सोचते हैं इसका पैसा खाओ, उसका पैसा खाओ। ये नहीं सोचते कि आपके पिता परमात्मा से धनवान कौन है। आपको क्या जरूरत है किसी से पैसे लेने की और उन्हें ठगने की? ये इसलिए होता है जब आप अपने को असुरक्षित महसूस करते हैं। पर गणेश जी के आशीर्वाद से उधर चित्त ही नहीं जाता। ये जो मां के विरोध में पाप हो गए वो ज्यादा गहन हैं। अब ये बात समझ लीजिए कि ये पाप जो हैं ये अन्दर ही अन्दर आपको खाते हैं। सारी बाई ओर की बिमारियां आप लगा लेते हैं। फिर मनो दैहिक बीमारियां भी हैं। ऐसे अनेक तरह की बीमारियां जो आज कल हैं वे अधिकतर आपका गणेश तत्व खराब होने के कारण है। अगर आप सहजयोगी हैं तो आपको रोज ध्यान करना होगा। बाई ओर से ध्यान कीजिए फिर दायीं ओर से फिर दोनों तरफ से। और बाई तरफ की विमारियां हैं तो प्रकाश या दीप जलाने से निकल सकती है। लेकिन दीप जो है श्री गणेश का दीप है। अन्धकार को दूर करना वो जानते हैं। जिससे कि हमारा खान पान ठीक तरह से पचता है और उसका विसर्जन भी ठीक से होता है ये काम भी उनका है। इस प्रकार हम अपने में शरीर का इतना विचार करते हैं कि

रोज शरीर को धोएंगे ये करेंगे वो करेंगे, उससे ज्यादा हमें अन्दर की नवीनता की ओर नजर करनी चाहिए। शीशे में अपनी तरफ देखकर कि मैं ये क्या कर रहा हूँ? और श्री गणेश का आह्वान करना चाहिये। उनसे कहना चाहिए कि आप आइए विराजिए। और सिर्फ मूलाधार पर ही नहीं पूरे सारे चक्रों में आप आइये। आज्ञाचक्र पर ईसा मसीह ने कहा है कि "मैं ही मार्ग हूँ, मैं ही द्वार हूँ। अलग-अलग तरीकों से उसका अनुवाद हुआ है पर उन्होंने ये नहीं कहा है कि मैं लक्ष्य हूँ। ये उन्होंने कभी नहीं कहा है। ठीक है अगर वो आत्मा हैं तो आत्मास्वरूप भी हैं। पर फिर उन्होंने आदि शक्ति पर छोड़ दिया।

अब अगर आप किसी भी धर्म को पढ़ें तो आपको आश्चर्य होगा कि हर ग्रन्थ में पवित्रता पर ही जोर दिया है। ये पवित्रता जो की श्री गणेश की शक्ति है और जब मनुष्य उस पवित्रता का और अपना मान नहीं रखता उसकी मर्यादाएं नहीं रखता तब उसको ये तकलीफ देने लग जाते हैं श्री गणेश मतलब ये कि श्री गणेश हट जाते हैं। और वो अगर हट गए तो उनकी शक्तियां भी हट गयीं। और वो फिर कोई भी बीमारियां हो सकती है। सहजयोगियों को चाहिए कि वो श्री गणेश को नमन करें जब भी कोई गलत विचार दिमाग में आए तो उनकी शुद्धता से वो सफाई करें। उनकी सफाई और मेहनत से मनुष्य शुद्ध हो जाता है। कुछ लोगों ने श्री गणेश को सिम्पैथेटिक पर घूमते देखा और समझ नहीं पाये। वे उसी को कृण्डलिनी समझ बैठे। इसी से बहुत गड़बड़ बात हो गयी। अपने अन्दर की धरोहर जो हमारी विरासत है ये पवित्रता को समझना चाहिए। विवाह भी उसी पवित्रता का बन्धन है। तो जिन लोगों ने धर्म को संभालने की कोशिश की, हम दस गुरुओं को मानते हैं, उन्होंने विवाह के प्रति बहुत जागरूकता प्रकट की। जैसे नानक साहब ने कहा। मोहम्मद साहब ने इतनी शादियां क्यों की? उस समय इतने लोग मारे गये थे, इतने पुरुष लोग मारे गये थे कि आदमी ही नहीं बचे थे। और औरतों के पास कोई व्यवस्था ही नहीं थी कि वो कुछ न कुछ ऐसे कामों में लग जाएं जिससे कि वो अपना धन उपार्जन कर सकें। उस वक्त तो कोई व्यवस्था ही नहीं थी। लोग करते क्या? और विवाह एक बन्धन है। जिससे कि मनुष्य पवित्र रहें। इसलिए मोहम्मद साहब ने इतनी शादियां करके और उन लोगों को बचाने की कोशिश की, उन औरतों को, जो कि गलत रास्ते पर जा सकती थी इसको समझने के लिए आप श्री कृष्ण को भी देखिये। उनकी सोलह हजार पत्नियां थी और पाँच और पत्नियां थीं। अब वो पुरुष थे और पुरुषों

पर लाँछन लग सकते हैं। किसी भी उम्र में लग सकते हैं। पर हम तो माँ हैं न। हमारे ऊपर कोई लाँछन नहीं लग सकता। और वो तो पुरुष थे। और वो अगर अपनी सोलह हजार शक्तियों को अपने साथ रखते तो लाँछित हो जाते। ये उनकी 16,000 शक्तियाँ और पाँच-पंच महाभूत थे। इन सब शक्तियों से उन्होंने सोचा शादी कर लेते हैं। तो ये उनकी शक्तियां थी जिनसे उन्होंने शादी की, इस प्रकार हमारे यहां भी समझने की जरूरत है। कि ये जो परमात्मा के अवतरण हैं इन्होंने ऐसे काम क्यों किये जो कि समाज रीतियों से अलग हैं। देखने में ये सब गलत हैं। क्योंकि ये अवतरण परमात्मा का अंश है, यानी परमात्मा का स्वरूप ही है। वो जो भी करेंगे अच्छा ही करेंगे। उनके अन्दर श्री गणेश पूरी तरह जागरूक हैं। इस प्रकार हमने सोचा की सिर्फ श्री गणेश पूजा करने से ठीक ही होगा। और उनके भाषण देने से भी नहीं होगा। उनको अपने अन्दर जागरूक करना होगा। ये जागृति, आप सब को मिल गई। लेकिन कभी-कभी मैं देखती हूँ कि यह डावां डोल है। जैसे ही ये डावां डोल होती है चित्त भी डावां डोल हो जाता है। फिर ऐसे जो सहजयोगी हैं हम उनको कहते हैं कि ये आधे अधूरे हैं। अभी अन्दर उतरे नहीं हैं। अपने चरित्र का मान रखना, या अपनी आत्मिक जो चीजें हैं उनका ध्यान रखना, उनको खुले आम रास्ते पर देखना या उनका प्रदर्शन करना या उनको नष्ट करना ये सब बातें सब बहुत गलत हैं। और कोई समझ नहीं सकता कि चित्त कितना बाबला हो जाता है। और इसी वजह से जब चित्त बाबला हो जाता है तो चित्त आपका कहीं भी जा सकता है और फिर आपको कोई भी बीमारी लग सकती है। कोई सी भी पीड़ा लग सकती है, कुछ भी हो सकता है। एक सहजयोगी को श्री गणेश को पूरी तरह हृदय से मानना पड़ेगा। उनकी स्तुति सबने की है, अलग-अलग तरह से। मोहम्मद साहब ने भी ईसा मसीह की स्तुति की क्योंकि वे जानते थे कि ये कृष्ण का ही स्वरूप है। पूरी तरह से ये निष्कलंक है। और यही बात अपने बारे में सोचना है कि हम अपने को निष्कलंक करें। ये कार्य बुद्धि परस्तर होने से नहीं होगा। आप अपने चित्त को ही समझाएं की भई गलत काम मत कर। अगर आप इस बात पर पूरी तरह से जम जाएं कि हमें ये सब गंदे काम नहीं करने हैं। ये सब गंदगी है तो कोई दुनिया की कोई शक्ति आपको उसमें फंसा नहीं सकती। इसलिए मैं कहती हूँ कि बच्चों जैसे बनें। उनका सहज-स्वभाव, उनका भोलापन। पर आज मैं देखती हूँ कि परदेश में इसका बड़ा जबरदस्त अभाव आ रहा है। न जाने कैसे गंदे काम करके बच्चों को

नष्ट कर देते हैं। शायद कोई बड़ी भारी नकारात्मक शक्ति चल रही इनका सर्वनाश करने के लिए। हिन्दुस्तान में यह बात बिल्कुल भी नहीं है। बच्चों को बताया जाए कि तुम ये काम मत करो, वो काम मत करो। पर परदेश में तो बच्चों को जैसा चाहो वैसा कर लो। बच्चों को कहना होगा कि ये गलत काम है और हम ये नहीं चाहते। उसके लिए हम आपको पैसा नहीं देंगे। आप समझ जाइये। नहीं तो हमारा समाज भी उसी तरह से हो जाएगा। उसकी अच्छाई तो आई नहीं उसकी बुराई आ गयी। आशा है आप लोग समझ गए हैं कि गणेश जी का कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि वही आपकी जागृति करते हैं। आपके चक्रों को शुद्ध करते हैं। उनमें प्रकाश डाल देते हैं और आपको हमेशा प्रकाश की ओर अग्रसर करते हैं। आपकी नजर हमेशा प्रकाश की ओर रहती है। ये चीज आपको आत्मसात करनी होगी कि हम श्री गणेश को कभी भी अपमानित नहीं करेंगे, कभी भी आप लोगों में, जो दिल्ली के हैं, आशा है आज की पूजा के बाद एक नया धर्म प्रस्थापित होगा। दो तरह के लोग होते हैं शुभ और अशुभ। ऐसे जो शुभ लोग हो जाते हैं उनकी एक नजर काफी है दूसरे आदमी को ठीक करने के लिए। एक नजर काफी है। वो नजर जिसे कहते हैं कटाक्ष कटाक्ष निरीक्षण। बाईं ओर की सारी समस्याएं ठीक हो सकती हैं। अगर आप अपने गणेश को जागृत करें। बाह्य में नहीं। बाह्य में बिल्कुल नहीं। अन्दर की चीज है। जिसे आप लोग प्राप्त करें। उसके प्रकाश से आप प्रकाशित हों और सारे ब्रह्मांड पर उनकी शक्ति का प्रादुर्भाव हो, चेतना आ जाए और लोग उसको मानें। यही हमारा आशीर्वाद है।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

ही पृथ्वी निर्माण केल्यावर श्री परमात्मा श्री आदिशक्तिने प्रथम विचार केला तो शुद्धता आणि पवित्रता प्रस्थापित करण्याच्या कारण त्यानंतरच चैतन्यलहरीचा सर्व आकांशात अविष्कार होणार होता. आतां हे परमचैतन्य सगळीकडे अखंडपणे आहे. पण ते कार्यान्वित व्हायला तुमच्यामध्ये त्याची अनुभूति पायला हवी.

तुम्ही स्वतः किंवा तुमचे विचार शुद्ध नसतील तर तुम्ही आंतमधील स्व - स्वरूपापर्यंत जाऊ शकणार नाही. ही जी सूर्यस्ता तम्हाला सहजमधून मिळाली आहे ती श्री गणेशांची कृपा आहे. श्री गणेशांनीच परमचैतन्य दिले आणि तेच चैतन्य - स्वरूपात आपल्या सर्व चक्षांवर आहेत. सर्व चक्र पूर्णपणे स्वच्छ व शुद्ध ज्ञान्याशिवाय कुंडलिनीचं उत्थान होतच नाही, आणि जरी ती वर आली तरी ती पुन्हा पुन्हा खाली जाईल.

कुंडलिनी आणि श्रीगणेश यांच्यामध्ये माफ-लेकरासारखं नातं आहे. तुम्हाला पुराणांतील गोष्ट माहीत आहेत - श्री पार्वती स्नान करीत होती आणि अंग घासून जो मळ निघाला, त्याच्यात खूप चैतन्य होतं, त्या मळापासून तिने श्रीगणेश तयार केला आणि त्याला बाहेर दारापाशी बसवला. श्रीगणेश असे पूर्णपणे श्री आदिशक्तीनेच निर्माण केले त्यामध्ये श्री सदाशिव्याचं काहीही सहभाग नव्हता. आतां तुम्ही हे पण नीट समजू शकाल की सेंट गॅब्रियेल कुमारी मेरीकडे पैजून तिला म्हणाले होते की, "तुझ्या उदरांतून या जगाला तारणारा जन्माला येणार आहे." एरवी अविवाहित स्त्रीला गर्भधारणा होणं हे फार मोठे पाप समजलं जात. पण भारतीयांना तसे वाटणार नाही कारण श्रीपार्वतीने श्रीसदाशिव्यांचा काहीही आधार न घेता एकटीने श्रीगणेश निर्माण केले त्याच ते मानतात. श्री येशू ख्रिस्तांचा जन्म असाच झाला. परदेशी लोकांना हे समजणं आणि पटणं अवघड आहे कारण ते सर्व माणसांकडे फक्त मानवप्राणी म्हणूनच बघतात, आणि आजसुद्धा त्यांच्यामध्ये या 'अद्वितीय गर्भधारणे' बद्दल प्रखर मतभेद आहेत. सहजयोग्यांनी या परमचैतन्याद्वारे झालेले खूप चमत्कार घडिले आहेत आणि त्यांचा परिणाम आतां कमी झाल्यामुळे तुमचे लक्ष या जगाकडे वळलं आहे. जग म्हणून आपण जे बघतो ती 'माया' आहे, आणि त्याच्या पलीकडे सत्य-विश्व आहे. श्री गणेश हे साक्षात् आहेत हे सत्य त्यांना त्यांच्या हातावरच कळतं.

मी जेव्हा ग्रीसमध्ये होते तेव्हा मी पाहिलं की आदिशक्तीने तिथे

"अथिना" चा अवतार घेतला होता, तिथे त्यांनी तिचं मंदीर पर्सेपोलिस (Persepolis) येथे निर्माण केलं आणि त्याच्या दाराशी इथे "बाल-भगवान" (Child God) आहेत असा आलेखही तयार केला. आतां इतका खूप काळ गेल्यामुळे हा बाल - भगवान कोण हे आतां कुणालाच माहीत नाही.

परकीय लोकांच्या हस्त्यांमध्ये हा बालसा आणि त्याच्या परंपरा या सर्वांचा नाश केला गेला. पण आम्ही आपली एका टिकाणी गेलो असताना तिथे दगडाचा एक मोठा गोल तुकडा पाहिला (नाभीसारखा) ज्याच्यातून खूप चैतन्य व्हात होतं आणि त्याच्या भागाच्या बाजूला आम्हाला स्वपंभू श्रीगणेश सापडले.

कालान्तराने पर्माबद्दल आस्था टेवणारे काही लोक पुढे आले, त्यांना पर्माची पुन्हा प्रस्थापना करायची होती. ज्यामुळे ते शुद्धतेच्या वरच्या स्तरावर पोचू शकतील आणि 'उद्धारा'ची वेळ येईल तेव्हा ते त्याकरता योग्य ठरतील. त्याचकरता त्यांनी या गोष्टीकडे जास्त लक्ष दिलेल्यांना 'मोसेस' कडून आधीच 'दहा आज्ञा' (Ten Commandments) मिळाल्या होत्या आणि त्याचं पालन करून योग्य वेळी त्यांना आत्मसाक्षात्काराकरता स्वतःला योग्य बनवायचं होतं. आपल्याकडे सुद्धा गुरु नानकादि धोर संतांनी याचकरता खूप कष्ट घेतले आणि सांगितलं की सर्व माणसांनी धर्म पाळावा. संतुलनात रहावं आणि पाप न जमवतां फक्त पुण्याचाच साठा करावा.

श्रीगणेशाचे कार्य वेगळं आहे. त्यांच्या प्रभावी शक्तीचा उपयोग करून ते शुद्धता जपतात. 'अवोम्भिता' ही त्यांची सर्वात मोठी शक्ति. त्याचं हत्तीचं तोंड हे त्यांच्यापाशी अहंकार-प्रतिअहंकार नसल्याचं द्योतक आहे. ते चिरंजीव बालक आहेत. येशू ख्रिस्त हे त्यांचेच अवतार होते. विज्ञानाचा उपयोग करून आपण सिद्ध करून दाखविलं आहे की श्रीगणेश मुळात एक शक्ति आहे आणि तिला जो आकार आला ते गणेशाचं रूप आहे. याचाच अर्थ असा की जे पूर्णपणे शुद्ध आहे, विनम्र आहे, निरागस आहे, स्वच्छ आहे आणि श्रद्धापुक्त आहे अशा हृदयांतच श्रीगणेश जागृत होऊ शकतात. श्रीगणेशांच्या कृपेशिवाय कुंडलिनीचं जागरण होऊच शकत नाही. कुंडलिनी ही श्रीगौरीची शक्ति आहे आणि तिच्या जागरणाच्या प्रत्येक क्षणी श्रीगणेश तिचं रक्षण करत असतात. एवढचं नाही तर एका चक्रातून पार झाल्यावर ते चक्र ती बंद करते म्हणजे ती पुन्हा खाली येऊ शकणार नाही. आपल्यामध्ये श्रीगणेशाचं स्थान

मूलाधारचक्रामध्ये आहे. पुष्कळ लोक इथे एक चुक करतात, कारण विकोणी भाकडडाह हे कुंडलिनीचे स्थान आहे (मूलाधार) आणि त्याच्याखाली श्रीगणेश मूलाधार चक्रावर आहेत, या दोघांचे कार्य अगदी वेगळे आहे हे पण तुम्हाला माहीत आहेच.

माझ्या कांही फोटोमध्ये श्री गणेश माझ्यामागे माझ्याही वरपर्यंत आहेत हे तुम्ही पाहिले आहे - इतर देवतांवरोबरही ते असेच असतात. भारतीय लोकांना श्री गणेशांची पावित्र्य-शक्ति माहीत आहेच, आणि म्हणून स्वतःच्या पावित्र्याची काळजी घेण्याचे महत्त्व ते ओळखतात. परकीय लोकांना त्याची एवढी जाण नसते. त्यांच्यामध्ये उपभोगवृत्ति जास्त आहे. भारतीय लोकांना याची जाण आहे आणि कांही थोडे लोक शुद्धता व पवित्रता पावत नसले तरी ते बरेच तसे दाखवतात. याच एक फायदा म्हणजे अनौत्तिका केंद्र समाजात उघड-उघड पसरले शकत नाही. उलट परकीय लोकांच्यामध्ये आपण पायावतीत कांही तरी मोठे, नवीन काम करता आहोत आणि त्याला आपणच योग्य आहोत ही वृत्ति आहे. भारतीय लोक याला मुख्यपणा समजतात. अमेरिकेमध्ये तर श्रीगणेश कुठेच दिसत नाहीत. आता सर्वनाश झपाची येऊ आल्यावर मात्र त्यांना पावित्र्याचे महत्त्व कळू लागले आहे आणि हे पण त्यांच्यातले जे सहजयोगी झाले आहेत त्यांनाच.

श्री गणेशांचा सर्वात मोठा गुण म्हणजे त्यांची अवोपिता. तुम्ही जेव्हा अवोपित होता तेव्हा तुम्ही सहज व शुद्ध बनता. स्वित्त म्हणाले होते, "तुमच्या उदाराची वेळ येईल तेव्हा तुम्ही लहान मुलांसारखे व्हाल." श्रीगणेशांची कृपा असतेच पण विशेष म्हणजे या अवोपितेच्या शक्तीमधूनच तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार होत असतो.

बुद्धिवादी लोकांना श्रीगणेश हे आपले विशेष दैवत आहे ही गोष्ट एकदम पटत नाही. अडचणी ही आहे की जोपर्यंत ते सूक्ष्मात येत नाहीत तोपर्यंत सर्व देव-देवता आपल्या अंतरंगातच आहे हे त्यांना समजणार नाही. श्रीगणेशांना चार हात आहेत आणि कार्बनच्या अणुलाही चार चारणा (Valencies) आहेत. या कार्बनकडे तुम्ही डावीकडून पहिल तर "स्वस्तिक" दिसेल. उजवीकडून पहिल तर "ओंकार" दिसेल, आणि खालून पहिल तर "अल्फा व ओमेगा" हे चिन्ह दिसेल. येशू स्वित्त म्हणाले "मी अल्फा आहे आणि मीच ओमेगा आहे" - अल्फा म्हणजे सुरुवात व ओमेगा म्हणजे शेवट. अल्फा व ओमेगा चिन्हे (लिपीमध्ये लिहिलेली) त्या अणुवर दिसतात. मी जेव्हा हे आन्वीयतेने परकीयांना सांगितले तेव्हा ते त्यांच्यावर संशोधन करायला लागले. त्यांनी कार्बन-अणूचे तीन दिशांनी फोटो काढले, त्या फोटोत मी वर सांगितली अगदी तशीच रचना दिसली. आता येशू स्वित्त म्हणतात की हाच श्रीगणेश आहे. हाच ओंकार आहे हाच स्वस्तिक आहे हे सिद्ध झाले.

हिटलरने पण स्वस्तिक हे चिन्ह वापरले. घड्याळाच्या फिरणाच्या काट्याच्या दिशेप्रमाणे जे स्वस्तिक काढतात ते अवोपिता व प्रगतीचे चोतक असते. पण त्याने वापरलेले स्वस्तिक चिन्ह उलट्या दिशेने काढलेले होते आणि ते विनाशाचे चोतक असते. म्हणजेच शक्ति जेव्हा पड्याळाविरुद्ध दिशेने फिरते तेव्हा खूप जास्त व्हायला लागतात, असा माणूस दुर्धर व्याधींनी पीडित असतो. काल एक माणूस आला होता त्याला स्नायूंचे दुखणे होते. या दुखण्यात **Myelitis** - स्नायू हळुहळु निकामी बनत जातात. श्रीगणेशांची शक्ती जेव्हा अशीच उलट्या दिशेने फिरायला लागते तेव्हा असेच वास्त होतात. हिटलरची अगदी तीच अवस्था झाली जेव्हा त्याने स्वस्तिकामधून श्रीगणेशांची शक्ति वापरायचा प्रयत्न केला. बरेच्या संशोधनामध्ये स्टॅन्सिल वापरले गेले. जोपर्यंत ते बरोबर फिरवले तोपर्यंत सर्व ठीक झाले पण जेव्हा नंतर ते स्टॅन्सिल

उलट फिरवले गेले तेव्हा त्याला अपघात येऊ लागले. अशा तऱ्हेने विन्हाचा चुकीचा उपयोग केल्यामुळेच परिणामी तो रस्त्यातला गेला.

पुण्यामध्ये जाहीर सभामध्ये तीन-चार वेळा मी लोकांना सांगितले की श्रीगणेश यांचा आदर करा, त्यांच्यासमोर ग्रामाधिकारणे काम करा त्यांचा चुकीचा, अपवित्र अशी कुठलीही गोष्ट वा काम आवडत नाही. लोकमान्य टिळकांनी चातू केलेला हा गणेशोत्सव दहा दिवस चालतो. पण पुण्यातला हा उत्सव पाहिल्यावर मला खरोखरच धक्काच बसला. श्रीगणेशांच्या मूर्तीपुढे अन्नील नाच - गाणी चालली होती. महिलांचे कपडेही असभ्य होते. दारु - सिगरेटचा अतिरेक चालला होता. श्रीगणेशांचे वाहन बिजय आहे (जयदूल वाहन). मी लोकांना सांगितले की श्रीगणेशांच्या रागापासून सावध रहा. माझ्या भाषणामधूनही मी सांगत होते की भूमितत्त्व असंच असते की त्याचे नियम जर तुम्ही पावले नाहीत तर धरणी कंपसुद्धा होऊ शकतात. आणि तसेच ज्ञाते, गणपति विसर्जनाच्या दिवशी जे दारूच्या नशेने झिंगून नाच-गाण्यात पुरे होते त्यांच्या जमिनी दुर्भंगून खचल्या. पुष्कळांना वाटते की पाश्चात्य देशांत जर हेच चालते तर आमचे काय चुकले? पण त्यांना कळत नाही की विनाशकारी शक्ति भयानक असते आणि त्याची सुरुवात माणसाच्या आंतमधूनच होते. इथे बसून त्या विनाश-शक्तीची आपल्याला कल्पना येणंही शक्य नाही तिकडे ६५ टक्के पेक्षा जास्त लोक दुर्धर रोगांनी (उदा. सिझोफ्रेनिया) ज्यांची संवपण आपल्याला टाळूक नाहीत- घासलेले आहेत, अशा तऱ्हेचे हे रोग कुठवर पसरले आहेत त्याचीही आपल्याला कल्पना नाही. इथे बाहेर खूप प्रकारचे जंतू, किडे, पुर, पूड आहेत. पण माणसं अजून ठीक आहेत. श्रीगणेशांच्या विरोधात जाण म्हणजे आईसमोर पाप करणे आहे. हे सर्व केव्हापासून चालू झाले म्हणजे तर फ्राइडसायबे घाणेरडे लोक आले आणि नीतिमतेविरुद्ध बडबडू लागले तेव्हापासून लोकांच्या मनःतली स्वित्ताची प्रतिमा त्यांनी डागडोळी आणि स्वतःचाच उदो-उदो करू लागले. त्यालाही केंद्रसारख्या रोगांनी शेवटी पातनायम मृत्यू आलाच म्हणा.

श्रीगणेश जर तुमच्या चक्रावर प्रसन्न झाले तर कुठलेही मानसिक आजारही सहज बरे होऊ शकतात. ते एक चिन्ह आहे. शब्दांनी जेव्हा एखाद्या वस्तूचे वर्णन करता येत नाही तेव्हा असं चिन्ह वापरतात. आजकाल चर्चाच जगाची अशी समजून आहे की अशी चिन्हे म्हणजे नुसते कल्पना असते आणि माणूस त्याच्यातच अडकून नुसता त्याचा विचारच करू लागतो. पण सहजयोगात ही चिन्हे म्हणजे सत्य आहे हे आपण सिद्ध करू शकतो. मानवी मन आणि दृष्टि मर्यादित असते. त्याला जर सत्य बघायचे असेल तर त्याने आजपर्यंतच्या समजुती टाकून देऊन त्याचा प्रत्यक्ष अनुभवच घ्यायला हवा. जो त्याला आजपर्यंत कधीच आला नव्हता. मानवाच्या सध्याच्या सीमित जाणीवतून त्याला सत्य समजु शकत नाही म्हणूनच श्रीगणेशांना समजून घेऊन त्यांची पुजा करणे जरूरीच आहे. श्रीगणेश जोपर्यंत या दिसीमध्ये प्रस्थापित होत नाहीत तोपर्यंत इथले राजकीय प्रश्न सुटणार नाहीत. त्याकरता आपल्याला स्वच्छ व शुद्ध चारित्र्याचे लोक, ज्यांची अवोपिता चालकासारखी आहे, जरूर आहेत. लोकांना वाटते की असे लोक देशाचा कारभार कसा करणार, आणि असे लोक आहेत कुठे? आजकाल सरकारी यंत्रणेमध्ये बरेच्या जागांवरचे अधिकारी देखील इतके भ्रष्ट झाले आहेत की ते जनतेची प्रत्येक बाबतीत दिशाभूल करत आहेत. कारण आंतमधून ते स्वतः असुरक्षित आहेत, परमेश्वर हीच खरी संपत्ति आहे हे त्यांना अजून समजले नाही.

तुम्ही जर सहजयोगी असाल तर तुम्ही दररोज ध्यान केलंच पाहिजे, प्रथम डावी नाडी, मग उजवी नाडी आणि नंतर दोन्ही मांड्या, डाव्या बाजूकडे

गुण अग्नितत्वाचा (प्रकाश) उपयोग करतात - जे गणेशतत्त्व आहे, त्याच काम अंधार नाहीसा करणे. त्यामुळे आपली पचनशक्ति व पचनक्रिया सुधारते. आपलं शरीर सुदृढ आणि कार्यक्षम रहावं म्हणून रोज आपण त्याची काळजी घेतो त्यापेक्षा जास्त काळजी आपण आपल्या अंतरंगातील पाण काढून टाकण्यासाठी घेतली पाहिजे, ही स्वच्छता ज्ञान्यावर, जसं आपण आरशांत स्वतःला बघतो त्याप्रमाणे आपण स्वतःच आपल्या अंतरंगाची परीक्षा घ्यायला हवी, यावेळी श्रीगणेशांना फक्त मूलाधार चक्रावरच नव्हे तर सर्व चक्रांवर येण्याचं आवाहन करावं, त्यांची सत्ता आज्ञा चक्रांपर्यंत आहे. येशू ख्रिस्त म्हणाले होते “मी रस्ता आहे. मीच मार्गस्थ आहे.” ते कधीच म्हणाले नाहीत की “मी म्हणजेच सर्वनाश आहे.” इथून पुढे त्यांनी सर्व आदिशक्तीवर तोपबोलं आहे.

सर्व धर्मांमध्ये शुद्धता व पवित्रता यांची महती सांगितली आहे, तीच श्रीगणेशांची मुख्य शक्ति आहे. माणूस जेव्हा मर्यादांचं उल्लंघन करतो व स्वतःच्या शुद्धतेचा आदर करत नाही त्यावेळी तो मोठमोठ्या संकटात अडकतो कारण श्रीगणेशांची शक्ती याच्यापासून दूर गेलेली असते. त्याला बरीच दुखणी व आजार होतात. सहजयोग्यांनी नेहमी श्रीगणेशांना आवाहन करावं त्यांच स्मरण करावं, जेव्हा मनात वाईट विचार येत असतील तेव्हा त्यांच्या शक्तीसाठी आणि मदतीसाठी प्रार्थना करावी. सातत्य आणि शुद्धता या गुणांमुळे मानव एवढा उन्नत होऊ शकतो की त्याचाच विश्वास बसणार नाही. ज्यांना श्रीगणेश मूलाधार चक्रावर दिसले त्यांनी चुकीने ते मूलाधार मानलं, जे कुंडलिनीचं स्थान आहे. याच कारणामुळे तांत्रिक लोकांनी खूप समस्या निर्माण केल्या.

शुद्धता आणि पवित्रता हा आपला वारसा आहे आणि आपण त्याचं जतन केलं पाहिजे. “विवाह” ही एक संस्था म्हणून त्याचाच भाग आहे. ज्यांनी ज्यांनी आपल्या पक्षांचं (वडा गुरु) रक्षण केलं त्यांनी त्याकरता खूप कष्ट घेतले आहेत. उदा. मोहम्मद साहेब. त्यांना तीन बायका असल्याबद्दल पुष्कळ बोलतात, पण त्या सभ्यानुसार ते योग्यच होतं. त्याकाळी पुष्कळ तरुण बुद्धांत मारले गेले आणि त्यांनी जर हा मार्ग दाखवला नसता तर अनेक तरुण विधवा, उपजीविकेचं कांहीच साधन न उरल्यामुळे वाममार्गाकडे वळल्या असत्या, कारण त्यांच्याशी लग्न करायला उपवरच नव्हते. विवाह ही एक संस्था म्हणून पवित्र बंधन आहे आणि म्हणूनच स्त्रियांचं शील राखण्याकरता त्यांनी बरीच लग्नं केली. आपण हे समजून घेतलं पाहिजे. आतां श्रीकृष्णांनासुद्धा सोळा हजार बायका होत्या, शिवाय पांच वेगळ्या, पण सोळा हजार या त्यांच्या शक्तीचा होत्या व पांच ही पंचमहाभूत तत्त्व होती. त्या शक्तीचा व तत्वांना राजमान्यता देण्यासाठी त्यांनी त्यांच्याशी विवाह केले. आतां ते पुरुष होते म्हणून त्यांच्यावर कुत्सित टोका झाली. मी आई आहे व मी मुलांना जन्म देऊ शकते म्हणून माझी गोष्ट वेगळी आहे. तर हा वादविवाद टाकण्यासाठी त्यांना श्रीकृष्णांनी पत्नी म्हणून स्वीकारलं. म्हणून या अवतारी लोकांनी बरबर विचित्र वाटण्याच्या गोष्टी कां केल्या ते आपण नीट समजून घेतलं पाहिजे. ते “परमात्म्या” चेच अंश (अवतार) होते आणि त्यांनी जे कांही केलं ते समाजहितासाठीच केलं. श्रीगणेश त्यांच्यामध्ये पूर्णपणे जागृत व कार्यान्वित होते.

आपण लक्षांत घ्यायला हवं की नुसती पूजा करून, भजनांतून स्तुति करून, त्यांच्याबद्दल भाषण देऊन आपल्याला श्रीगणेश प्राप्त होणार नाहीत तर आपण त्यांना आपल्यामध्येच जागृत करायला हवं. तुमच्या सर्वांमध्ये ते जागृत झाले आहेत पण अजून पूर्णपणे नाही. म्हणूनच तुमचं स्थिर रहात नाही. प्रत्येकाने आपल्या स्वतःच्या चारित्र्याचा सन्मान राखला पाहिजे. आपलं व्यक्तिमत्त्व आपल्या कायूत टेबलं पाहिजे, त्याचं प्रदर्शन करू नये, त्याची विक्री करू नये, किंवा साप्पा दृष्टिकोनांनी त्याच्या अस्तित्वाला बाधा होऊ देऊ नये. या सर्व चुकीच्या गोष्टी आहेत. प्रत्येकाने हे समजलं पाहिजे. अशा बागण्यानं साक्षात्कार होणारच नाही पण चित्त मात्र भरकटेल. मग तुमचं चित्त भलत्या

मार्गाला लागेल आणि शेवट तुम्हाला त्रास व आजार भोगावे लागतील. कांहीही होऊ शकतं.

आता ‘स्तुति’ करण्याचे वेगवेगळे प्रकार आहेत. येशू ख्रिस्ताची स्तुती करतांना मोहम्मदसाहेब म्हणाले की “तो सर्वांमध्ये निष्कलंक आहे. आपणही रोजच्या रोज जास्त निष्कलंक वनत राहू. पाची काळजी घेतली पाहिजे ही स्थिति मिळवण्यासाठी आपलं लक्ष इतकं शुद्ध झालं पाहिजे की कुठलीही चूक आपल्या हांतून होणारच नाही. यामधे आपलं मन अजिबात बाजूला ठेवायचं. एकदा ही अवस्था प्रस्थापित झाली आणि आपण चुकीची गोष्ट करू शकत नाही हे समजलं की बाहेरच्या कसल्याही दुष्ट, वाईट, घाणेरड्या प्रवृत्ति किंवा मोह आपल्यापासून दूरच पळतात. म्हणून मी म्हणते की लहान मुलासारखं निरागस, निष्पाप व सरळ होणं ही सर्वांत सोपी गोष्ट आहे. आजकाळ पाश्चिमात्य देशांत मी बघते की लहान मुलांवर सर्व बत्तुंनी बापांचा हल्ला होत आहे, जसा एकादा विनाशकारी प्रवाहांचा स्रोत त्यांच्यावर चालून येत आहे. इथे असा हल्ला होणार नाही याबद्दल आपण खूप सतर्क राहिलं पाहिजे. आपली भारतीय संस्कृति इतकी समृद्ध व उत्तम आहे की मुलं खरोखरच खेळत उन्नत होऊ शकतील. या मुलांकडे आणि त्याचबरोबर स्वतःकडे जाणीवपूर्वक लक्ष देणं ही तुमची जबाबदारी आहे. मुलांना ते सहजयोगी असल्याची सतत आठवण करून देणं आणि कुटुंबा गोष्टी करायच्या नाहीत हे त्यांना समजावून सांगणं जरूरीच आहे. आजकाळ समज असा आहे की मुलांना आमुक करू नको असे सांगणं हे त्यांच्या प्रगतीला अडसर घालणं समजतात. परदेशांत मुलांना काय वाटेल ते करू देतात. मग त्यांना जन्म तरी कां दिलात?

मग तुमची जबाबदारी काय राहिली? तुम्ही काय करायला हवं? तुम्ही त्यांना समजावलं पाहिजे, “तुं हे करतोस ते चूक आहे, आम्ही मग कांही मदतीला येणार नाही आणि तुला पैसा पण देणार नाही” असे सांगा.

नाहीं तर आपला सारा समाज त्याच चुकीच्या मार्गाकडे जाईल. त्यातून आपल्याला चांगल तर कांही मिळणारच नाही, उलट बाहेरच्या वाईट गोष्टींचाच आपण नकळत स्वीकार करू मला आशा आहे की श्रीगणेशांचं कार्य म्हणजे “सह” आहे हे तुम्ही सर्व जण समजाल. त्यांच्याकडून तुम्हाला आत्म-साक्षात्कार मिळाला आहे, त्यांच्या मदतीनेच तुमची सर्व चक्रे स्वच्छ व शुद्ध होतात. त्यांच्याकडून तुम्हाला प्रकाश मिळतो आणि तुम्हाला व तुमच्या दृष्टीला नेहमी प्रकाशाकडे वाटचाल करता येते. म्हणून श्रीगणेशांचा आपमान आपल्याकडून कधीही होणार नाही ही गोष्ट तुमच्यामध्ये अगदी खोलवर रुजली पाहिजे.

माझी आशा आहे की या पुजेनंतर या दिवशीमध्ये तुम्हा सर्वांच्या हृदयांत एक नवीन “धर्म” प्रस्थापित होईल - शुभंकर धर्म. जो माणूस “शुभ” आहे त्यांच्या नुसत्या एका दृष्टिकोनाने सर्व लोक टिक होतात - एका दृष्टिकोनात पूर्ण निरीक्षण होतं, म्हणून “कटाक्ष कटाक्ष निरीक्षण” असे म्हणतात. तुमची स्मरणशक्ती वाढते. ज्या ब्राह्मूकील सर्व दोष श्रीगणेश जागृत झाल्यावर नाहीसे होतात. अर्थात हे सर्व बाहेरून कांही मिळण्यासारखं नाही तर ते आंतल्या आंतच होत असते. हे तुम्ही मिळवू शकाल आणि त्याच्या प्रकाशात तुम्ही पण प्रकाशित व्हाल ही मी आशा करते. या शक्तीचं ज्ञान आणि जाणीव सर्व ब्रह्मांडांत पसरलं दे आणि सर्व लोकांना साक्षात्कार होऊं दे हेच माझे तुम्हा सर्वांना आशीर्वाद आहेत.

श्रीगणेशांबद्दल बोलायला लागलं तरी ध्यान लागतं आणि आपलं लक्ष आंत खोल जातं. जसं मोठ्या पाणसांच्या गुपमध्ये एकादा गोड मुलगा आज्ञा तर सर्वांचं लक्ष त्याच्याकडेच जातं. झाला “वात्सल्य रस” म्हणतात. हे वात्सल्य तुम्ही सर्वजण जीवनांत आणाल अशी माझी आशा आहे.

परमेश्वराचे तुम्हाला अनंत आशीर्वाद.